कृषीय उद्यमों की प्रमुख विशेषताएं

3.1 कृषीय स्वकार्य उद्यमों तथा संस्थानों व उनमें कार्यरत व्यक्तियों की संख्या का जनपदवार तुलनात्मक विवरण

3.1.1 आर्थिक गणना 2005 के आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल 40.21 लाख उद्यमों में से 2.57 लाख(6.39 प्रतिशत) कृषीय उद्यम अभिज्ञापित किये गये, जिसमें वर्ष 1998 की तुलना में 110.01 प्रतिशत की वृद्धि परिलक्षित हुई । इसी प्रकार समस्त उद्यमों में कार्यरत 81.45 लाख व्यक्तियों में से 5.21 लाख(6.4 प्रतिशत) कृषीय उद्यमों में कार्यरत पाये गये जो वर्ष 1998 की तुलना में 142.3 प्रतिशत अधिक है ।(तालिका–1)

3.1.2 प्रदेश के कुल 2.57 लाख कृषीय उद्यमों में से स्वकार्य उद्यमों की संख्या 2.19 लाख(85.21 प्रतिशत) तथा संस्थानों की संख्या 0.38 लाख(14.79 प्रतिशत) थी । वर्ष 1998 की तुलना में वर्ष 2005 में स्वकार्य उद्यमों की संख्या में 97.50 प्रतिशत तथा संस्थानों की संख्या में 231.1 प्रतिशत की वृद्धि पायी गयी । कृषीय उद्यमों में कार्यशील कुल 5.21 लाख व्यक्तियों में से 4.09 लाख(78. 5 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यमों में तथा शेष 1.12 लाख (21.5 प्रतिशत) संस्थानों में कार्यरत थे । इस प्रकार वर्ष 1998 की तुलना में इनमें क्रमशः 124.0 प्रतिशत तथा 246.6 प्रतिशत की वृद्धि पायी गयी । संस्थानों में कार्यशील कुल 1.12 लाख व्यक्तियों में से 0.70 लाख(62.5 प्रतिशत) भाड़े के व्यक्ति थें जिनमें वर्ष 1998 की तुलना में 228.8 प्रतिशत की वृद्धि दृष्टिगोचर हुई ।(तालिका–1)

3.1.3 कृषीय उद्यमों की जनपदवार संख्या की विवेचना से ज्ञात होता है कि प्रदेश में जनपद अलीगढ़ 39183(15.2 प्रतिशत), बदायूँ 36221(14.0 प्रतिशत) तथा मेरठ 23642 (9.1 प्रतिशत) उद्यमों सहित क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहा । इसी प्रकार स्वकार्य उद्यमों की संख्या की दृष्टि से जनपद अलीगढ़ 35423(16.2 प्रतिशत), बदायूँ 35060 (16.0 प्रतिशत) तथा मेरठ 19080(8.7 प्रतिशत) क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहा, जबकि संस्थानों की संख्या की दृष्टि से जनपद मेरठ 4562(11.8 प्रतिशत), अलीगढ़ 3760(9.8 प्रतिशत) तथा जे.पी. नगर 3038(7.9 प्रतिशत) क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर पाया गया ।(तालिका–एस–7)

ग्रामीण क्षेत्र के कृषीय उद्यमों में जनपद अलीगढ़ 38339(16.5 प्रतिशत), बदायूँ 32778(14.1 प्रतिशत) तथा मेरठ 20484(8.8 प्रतिशत) क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहा जबकि नगरीय क्षेत्र में जनपद बदायूँ 3443(13.4 प्रतिशत), मेरठ 3158 (12.3 प्रतिशत) तथा जनपद जी.बी.नगर 1807(7.0 प्रतिशत) उद्यमों सहित क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर पाया गया ।(तालिका–एस–7)

ग्रामीण क्षेत्र के कृषीय स्वकार्य उद्यमों में जनपद अलीगढ़ 34756 (17.4 प्रतिशत), बदायूँ 31715(15.8 प्रतिशत) तथा मेरठ 16671(8.3 प्रतिशत) क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहा, जबकि नगरीय क्षेत्र में जनपद बदायूँ 3345(17.6 प्रतिशत), मेरठ 2409(12.6 प्रतिशत) तथा जी.बी.नगर 1623(8.5 प्रतिशत) उद्यमों सहित क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर पाया गया ।(तालिका–एस–7)

ग्रामीण क्षेत्र के कुल कृषीय संस्थानों में जनपद मेरठ 3813(12.0 प्रतिशत), अलीगढ़ 3583(11.3 प्रतिशत) तथा जे.पी.नगर 2949(9.3 प्रतिशत) क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहा जबकि नगरीय क्षेत्र में जनपद मेरठ 3813(12.0 प्रतिशत), कानपुर नगर 681(10.3 प्रतिशत) तथा बरेली एवं लखनऊ 465(7.0 प्रतिशत) संस्थानों सहित क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर पाया गया ।(तालिका–एस–7)

3.1.4 कृषीय उद्यमों में कार्यरत कुल 5.21 लाख व्यक्तियों में से ग्रामीण क्षेत्र में 4.68 लाख व्यक्ति कार्यरत पाये गये जो 1998 की तुलना में 167.4 प्रतिशत अधिक थे तथा नगरीय क्षेत्र में 0.53 लाख व्यक्ति कार्यरत पाये गये जो 1998 की तुलना में 32.5 प्रतिशत अधिक थे ।(तालिका–1)

3.1.5 कृषीय उद्यमों में लगी जनशक्ति के परिणामों की जनपदवार आन्तरिक विवेचना से ज्ञात होता है कि संयुक्त क्षेत्र (ग्रामीण व नगरीय) में स्थित उद्यमों में कार्यरत प्रति जनपद औसत 7449 व्यक्तियों से अधिक जनशक्ति वाले प्रदेश के 16 जनपदों में सर्वाधिक व्यक्ति जनपद अलीगढ़ 94461(18.1 प्रतिशत), बदायूँ 70777(13.5 प्रतिशत) तथा मेरठ 57198 (10.9 प्रतिशत) पाये गये

। इसके विपरीत जनपद चित्रकूट, हरदोई तथा सहारनपुर में सबसे कम कार्यरत व्यक्ति क्रमशः 76(0.01 प्रतिशत), 102(0.01 प्रतिशत) तथा 152(0.02 प्रतिशत) पाये गये । स्वकार्य उद्यमों में 4.10 लाख व्यक्तियों में जनपद अलीगढ़ में सर्वाधिक 80999 (19.7 प्रतिशत), बदायूँ में 66156(16.1 प्रतिशत) तथा मेरठ में 43046(10.5 प्रतिशत) व्यक्ति कार्यरत पाये गये, जबकि जनपद हरदोई में सबसे कम 16 व्यक्ति कार्यरत थे । संस्थानों में कार्यरत 1.12 लाख व्यक्तियों में जनपद मेरठ में सर्वाधिक 14152(12.6 प्रतिशत), अलीगढ़ में 13462(12.0 प्रतिशत) तथा जे.पी.नगर में 8720(7.8 प्रतिशत) व्यक्ति कार्यरत थे । (तालिका–एस–8)

कृषीय उद्यमों में ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत जनपद अलीगढ़ में सर्वाधिक 92203(19.1 प्रतिशत) व नगरीय क्षेत्र के अन्तर्गत जनपद मेरठ में सर्वाधिक 6446 (27.6 प्रतिशत) व्यक्ति कार्यरत थे । स्वकार्य उद्यमों में ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत जनपद अलीगढ़ में सर्वाधिक 79333(21.0 प्रतिशत) व्यक्ति व नगरीय क्षेत्र में जनपद बदायूँ में सर्वाधिक 5992(18.1 प्रतिशत) व्यक्ति कार्यरत थे, जबकि कृषीय संस्थानों के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र में सर्वाधिक व्यक्ति जनपद अलीगढ़ में 12870(14.0 प्रतिशत) व नगरीय क्षेत्र के अन्तर्गत मेरठ में 2550(12.7 प्रतिशत) कार्यरत रहे ।(तालिका–एस–8)

3.2 निजी व सहकारी क्षेत्र के संस्थानों तथा उनमें कार्यरत व्यक्तियों की संख्या का परिदृश्य

3.2.1 कृषीय संस्थानों में स्वामित्व की विवेचना से ज्ञात होता है कि कुल कृषीय संस्थानों 38337 में निजी क्षेत्र में 36224(94.5 प्रतिशत) संस्थान कार्यरत पाये गये जबकि सहकारी संस्थानों की संख्या 278(0.7 प्रतिशत) थी तथा सरकारी एवं सार्वजनिक उपक्रम(ॢ) के अन्तर्गत 1835(4.8 प्रतिशत) संस्थान पाये गये ।(तालिका–एस–6)

क्षेत्रवार विवेचना से यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कुल संस्थान 31722 में से निजी स्वामित्व के अन्तर्गत 29777(93.9 प्रतिशत), सहकारी क्षेत्र में 225 (0.7 प्रतिशत) तथा सरकारी एवं सार्वजनिक उपक्रम(ॢ) के अन्तर्गत 1720(5.4 प्रतिशत) संस्थान कार्यरत थे, जबकि नगरीय क्षेत्र में स्थित कुल संस्थानों 6615 के सापेक्ष क्रमशः 6447(97.5 प्रतिशत), 53(0.8 प्रतिशत) तथा 115(1.7 प्रतिशत) पाये गये ।
(तालिका–एस–6)

3.2.2 कृषि संस्थानों के रोजगार आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि वर्ष 2005 में कुल 111773 व्यक्ति कार्यरत थे, जो वर्ष 1998 की तुलना में 246.6 प्रतिशत अधिक हैं । क्षेत्रवार स्थिति के अनुसार निजी क्षेत्र के संस्थानों में लगे कर्मियों की संख्या में वर्ष 1998 की तुलना में 244.8 प्रतिशत की वृद्धि सहित वर्ष 2005 में 107110 व्यक्ति कार्यरत पाये गये, जबकि सहकारी क्षेत्र के संस्थानों में 51.6 प्रतिशत की वृद्धि सहित 884 व्यक्ति कार्यरत थे ।(तालिका–1, एवं एस–10)

3.2.3 उक्त विवेचना से ज्ञात होता है कि समग्र रूप से प्रति संस्थान कुल व्यक्तियों की संख्या 2.91 थी, वहीं निजी क्षेत्र में यह संख्या 2.95 तथा सहकारी क्षेत्र में 3.2 व्यक्ति प्रति संस्थान परिलक्षित हुयी ।

3.3 रोजगार आकार वर्ग तथा क्षेत्रानुसार स्वकार्य उद्यमों तथा संस्थानों की संख्या का वितरण

3.3.1 स्वकार्य उद्यम

3.3.1.1 प्रदेश के कुल 2.19 लाख कृषीय स्वकार्य उद्यमों में से 1–5 व्यक्ति आकार वर्ग में सर्वाधिक 2.16 लाख(98.6 प्रतिशत) उद्यम, 6–9 आकार वर्ग में 0.02 लाख(1.0 प्रतिशत) उद्यम एवं 10 तथा अधिक आकार वर्ग में न्यूनतम मात्र 76(0.4 प्रतिशत) उद्यम क्रियाशील पाये गये ।(तालिका–एस–17)

3.3.1.2 ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कुल 2.0 लाख स्वकार्य उद्यमों में से 1–5 व्यक्ति आकार वर्ग में सर्वाधिक 1.97 लाख(98.5 प्रतिशत) उद्यम, 6–9 आकार वर्ग में 0.02 लाख (1.0 प्रतिशत) उद्यम एवं 10 तथा अधिक आकार वर्ग में न्यूनतम मात्र 69(0.04 प्रतिशत) उद्यम क्रियाशील पाये गये ।(तालिका–एस–17)

3.3.1.3 नगरीय क्षेत्र में स्थित कुल 0.19 लाख स्वकार्य उद्यमों में से 1–5 व्यक्ति आकार वर्ग में सर्वाधिक 0.19 लाख(99.0 प्रतिशत) उद्यम, 6–9 आकार वर्ग में 187(1.0 प्रतिशत) उद्यम एवं 10 तथा अधिक आकार वर्ग में न्यूनतम 7(0.03 प्रतिशत) उद्यम क्रियाशील पाये गये ।(तालिका–एस–17)

3.3.2 संस्थान

3.3.2.1 प्रदेश के कुल 0.38 लाख कृषीय संस्थानों में से 1–5 व्यक्ति आकार वर्ग में सर्वाधिक 0.36 लाख(94.9 प्रतिशत) संस्थान क्रियाशील थे, जिसकी आन्तरिक विवेचना से ज्ञात होता है कि 1, 2, 3, 4 व 5 व्यक्ति आकार वर्ग में क्रमशः 4418, 16181, 9661, 4331 व 1815 संस्थान कार्यशील थे । 6–9 व्यक्ति वर्ग में 1641(4.3 प्रतिशत), 10–99 वर्ग में 251(0.7 प्रतिशत), 100–199 वर्ग में 8(0.02 प्रतिशत) संस्थान पाये गये, जबकि 200–499 व्यक्ति वर्ग में 1 व 500 तथा अधिक व्यक्ति वर्ग में कोई संस्थान नहीं पाये गये ।(तालिका–एस–14)

3.3.2.2 ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कुल 31722(83.0 प्रतिशत) संस्थानों में से 1–5 व्यक्ति वर्ग में सर्वाधिक 30148(95.0 प्रतिशत) संस्थान क्रियाशील थे, जिनमें 1, 2, 3, 4 व 5 व्यक्ति वर्ग में क्रमशः 3939, 13060, 7988, 3623 व 1538 संस्थान स्थित थे । इसके अतिरिक्त 6–9 व्यक्ति वर्ग में 1328(4.2 प्रतिशत), 10–99 वर्ग में 216(0.7 प्रतिशत), 100–199 वर्ग में 30(0.09 प्रतिशत) संस्थान पाये गये, जबकि 200–499 व 500 तथा अधिक व्यक्ति वर्गो में कोई संस्थान नहीं पाये गये ।(तालिका–एस–14)

3.3.2.3 नगरीय क्षेत्र में स्थित कुल 6615(17.0 प्रतिशत) संस्थानों में से 1–5 व्यक्ति वर्ग में सर्वाधिक 6258(94.6 प्रतिशत) संस्थान क्रियाशील थे, जिनमें से 1, 2, 3, 4 व 5 व्यक्ति वर्ग में क्रमशः 479, 3121, 1673, 708 व 277 संस्थान स्थित थे । इसके अतिरिक्त 6–9 व्यक्ति वर्ग में 313(4.7 प्रतिशत), 10–99 वर्ग में 35(0.5 प्रतिशत), 100–199 वर्ग में 8, 200–499 वर्ग में 1 संस्थान पाये गये, जबकि 500 तथा अधिक व्यक्ति वर्गो में कोई संस्थान नहीं पाये गये ।(तालिका–एस–14)

3.4 कृषीय संस्थानों में कार्यरत कुल व्यक्तियों के सापेक्ष भाड़े के कर्मकरों का विवरण

3.4.1 प्रदेश के कृषीय संस्थानों में कार्यरत कुल 1.12 लाख व्यक्तियों के सापेक्ष भाड़े के कुल 0.7 लाख कर्मकरों से सम्बन्धित आंकड़ों की विवेचना करने पर ज्ञात होता है कि क्षेत्रवार स्थिति के अनुसार संस्थानों में वर्ष 1998 में कार्यरत कुल व्यक्यिों की संख्या के सापेक्ष भाड़े के कर्मकरों की संख्या ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र में क्रमशः 70.4 प्रतिशत व 59.3 प्रतिशत थी । परन्तु वर्ष 2005 में यह घटकर ग्रामीण क्षेत्र में 61.9 प्रतिशत व नगरीय क्षेत्र में बढ़कर 65.0 प्रतिशत हो गयी । विस्तृत विश्लेषण से विदित होता है कि वर्ष 1998 की तुलना में वर्ष 2005 में प्रति संस्थान कुल व्यक्यिों की संख्या 4.6 प्रतिशत बढ़कर 2.78 से 2.91 हो जाने के उपरान्त भी संस्थानों में कुल कार्यरत व्यक्तियों के सापेक्ष भाड़े के कर्मकरों में आंशिक ह्रास परिलक्षित हुआ है ।(तालिका–1)

3.5 कृषीय उद्यमों की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना

3.5.1 कृषीय उद्यमों की प्रमुख विशेषताओं के अन्तर्गत उद्यमों की प्रकृति, बिना परिसर के उद्यम, स्वामित्व का प्रकार व स्वामी का सामाजिक वर्ग तथा शक्ति/ईंधन रहित चालित उद्यमों की संख्या आदि से सम्बन्धित क्षेत्रवार विस्तृत आंकड़े संलग्न तालिका–3.6 में प्रदर्शित हैं ।

3.5.2 आर्थिक गणना 2005 में अभिज्ञापित कुल 2.57 लाख कृषीय उद्यमों में से 0.45 लाख(17.5 प्रतिशत) उद्यम मौसमी प्रकृति के थे, जिनमें से 0.40 लाख(88.9 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम जो कुल स्वकार्य उद्यमों के 18.3 प्रतिशत थे कार्यरत पाये गये । मौसमी प्रकृति के कुल कृषीय उद्यमों में से 1149(2.5 प्रतिशत) उद्यम नगरीय क्षेत्र में स्थित थे, जिनमें से 270(23.5 प्रतिशत) उद्यम संस्थान के अन्तर्गत तथा 879(76.5 प्रतिशत) उद्यम स्वकार्य के अन्तर्गत पाये गये जबकि ग्रामीण क्षेत्र के कुल 44301(97.5 प्रतिशत) मौसमी उद्यमों में से 38858(87.7 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 5443 उद्यम(12.3 प्रतिशत) संस्थान के अन्तर्गत क्रियाशील थे ।(तालिका–एस–5, एस–6)

3.5.3 कुल कृषीय उद्यमों में 28.24 हजार(11.0 प्रतिशत) उद्यम बिना परिसर के थे, इनमें 23.4 हजार(82.9 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 4.84 हजार(17.1 प्रतिशत) संस्थान बिना परिसर के पाये गये । ग्रामीण क्षेत्र के 24.87 हजार उद्यमों में से 20.75 हजार(83.4 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 4.12 हजार(16.6 प्रतिशत) संस्थान बिना परिसर के पाये गये, जबकि नगरीय क्षेत्र में कुल 3.37

हजार उद्यम बिना परिसर के थे, जिनमें से 2.65 हजार(78.7 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 0.72 हजार(21.3 प्रतिशत) संस्थान के अन्तर्गत थे। (तालिका–एस–5, एस–6)

3.5.4 प्रदेश में 2.34 लाख उद्यम शक्ति/ईंधन रहित चालित थे, जो कुल कृषीय उद्यमों का 91.0 प्रतिशत है । वर्ष 1998 की तुलना में ऐसे उद्यमों में 122.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई । शक्ति/ईंधन रहित 200958(85.8 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 33190(14.2 प्रतिशत) संस्थान कार्यरत पाये गये । ग्रामीण क्षेत्र के 210549 शक्ति/ईंधन रहित उद्यमों में 183159 (86.9 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 27390(13.1 प्रतिशत) संस्थान कार्यरत थे । नगरीय क्षेत्र के अन्तर्गत शक्ति/ईंधन रहित 23599 उद्यमों में से 17799(75.0 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 27390(25.0 प्रतिशत) संस्थान थे । इस प्रकार वर्ष 1998 की तुलना में ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के शक्ति/ईंधन रहित उद्यमों में क्रमशः 138.6 प्रतिशत व 44.1 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई ।(तालिका–एस–5, एस–6)

3.5.5 प्रदेश के कृषीय उद्यमों में स्वामित्व के सामाजिक वर्ग की विवेचना करने पर ज्ञात होता है कि 3257(1.3 प्रतिशत) अनुसूचित जनजाति, 37027(14.4 प्रतिशत) अनुसूचित जाति तथा 158331(61.6 प्रतिशत) अन्य पिछड़ी जाति के व्यक्तियों द्वारा संचालित थे । अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों द्वारा संचालित कुल उद्यमों में से 2719(83.5 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 538(10.5 प्रतिशत) संस्थान के अन्तर्गत स्थित थे । ग्रामीण क्षेत्र के ऐसे 2902 उद्यमों में से 2466(84.9 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 436(15.1 प्रतिशत) संस्थान थे, जबकि नगरीय क्षेत्र में 355 उद्यमों में 253(71.2 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 102(28.8 प्रतिशत) संस्थान थे । अनुसूचित जाति के व्यक्तियों द्वारा संचालित कुल कृषीय उद्यमों में से 32512(87.8 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 4515(12.2 प्रतिशत) संस्थान थे । इस वर्ग में ग्रामीण क्षेत्र के 32383 उद्यमों में 30411(93.9 प्रतिशत) स्वकार्य तथा 1972(6.1 प्रतिशत) संस्थान थे जबकि नगरीय क्षेत्र के 2614 उद्यमों में से 2101(80.3 प्रतिशत) स्वकार्य तथा 513(19.7 प्रतिशत) संस्थान थे । इसके अतिरिक्त अन्य पिछड़ी जातियों द्वारा संचालित उद्यमों में 136613(86.2 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 21718(13.8 प्रतिशत) संस्थान थे । ग्रामीण क्षेत्र के 231530 उद्यमों में 199808(86.3 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यम तथा 31722 (13.7 प्रतिशत) संस्थान थे, जबकि नगरीय क्षेत्र के 25620 उद्यमों में से 19005 (74.1 प्रतिशत) स्वकार्य तथा 6615(25.9 प्रतिशत) संस्थान कार्यरत थे ।

विस्तृत जानकारी संलग्न विशेष तालिका संख्या एस–5 तथा एस–6 में दी गयी है ।